ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की भारतीय भाषाओं (इण्डियन लेंग्वेजेज) की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष-15 अंक : 4 (पूर्णांक - 60)

दिसम्बर 2021- फरवरी 2022

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	
	1. **सन्त मीराबाई**	05
	(1) मैं कहुँ देख्यौ री ..... (2) बन बंसी बजावै	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	
	2. **डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त,** दतिया (मध्यप्रदेश)	06
	मीरा का अतुलित योगदान	
3.	**सम्पादकीय**	
	3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी,** चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	07–09
	भारतीयता का अर्थ : भारतीय धर्म-संस्कृति	
4.	**मीरा-सन्दर्भपक्ष**	
	4. **डॉ. रीतिका गर्ग,** जयपुर (राजस्थान)	10–13
	मीराबाई के पदों में श्रीकृष्ण का स्वरूप	
5.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
	5. **डॉ. निशा यादव,** देहरादून (उत्तराखण्ड)	14–20
	कबीर की दार्शनिक चेतना	
	6. **डॉ कुलविन्दर कौर,** कपूरथला (पंजाब)	21–25
	गुरु नानक बानी का सार तत्त्व	
6.	**वेद/पुराण/रामायण पक्ष**	
	7. **श्री उपेन्द्रनाथ राय,** मेटेली (प.बंगाल)	26–29
	प्राचीन भारत में लिपि विज्ञान और वेद	
	8. **डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी,** प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)	30–37
	सांस्कृतिक इतिहास का स्रोत : लिङ्गपुराण	
	9. **प्रो. मन्जुनाथ एन.अंबिग,** चैन्नई (तमिलनाडु)	38–47
	भूमि पुत्री सीता	
7.	**दर्शन पक्ष**	
	10. **डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी,** सरदारशहर (राजस्थान)	48–51
	जिद्दू कृष्णमूर्ति के दर्शन में ज्ञान मीमांसा	

गुरु नानक बानी का सार तत्त्व

- डॉ. कुलविन्दर कौर

गुरु नानक भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति शाखा के अग्रणी एवं स्थापित वाणीकार हैं। ईश्वरीय उपासना में उनका कोई सानी नहीं है। बाल्यावस्था से ही उन्हें ईश्वरीय साक्षात्कार होता है और वह अपनी अवस्था के लोगों से इतर एक संसार की रचना करते हैं जिसमें सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जो अलौकिक है, अदृश्य है, अलक्ष्य है, अगम्य है, अगोचर है, निराकार है, निरंजन है, सबसे बड़ी बात जिसे गा कर पाया जा सकता है। गुरु नानक की विशिष्टता इसी में निहित है कि उन्होंने ईश्वर को गा-गाकर ही प्राप्त किया है, आत्मसात् किया है, साक्षात्कृत किया है-

"गावै को ताणु होवै किसे ताणु
गावै को दाति जाणै नीसाणु" (जपुजी)

साथ ही वे लिखते हैं-

"गावीऐ सुणीऐ मनि रखिए भाव
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ" (जपुजी)

गुरु नानक एक समन्वयवादी साधक थे। वह एक ही समय में साधु भी थे और गृहस्थ भी थे। वे निर्गुण ईश्वर की उपासना करते हुए सगुण ईश्वर को नकारते भी नहीं हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि श्री कृष्ण की तरह गुरु नानक देव जी भी गैया चराया करते थे। कई-कई दिन किसी जंगल के कोने में बैठकर एकांत में ईश्वर से साक्षात्कार करते थे और फिर सांसारिक कार्यों हेतु पुनः इहलोक में लौट आते थे। उनका जीवन आदर्श एवं यथार्थ का सुंदर मिश्रण था। वे सच्चा सौदा करने में विश्वास करते थे और उन्होंने मानवता के हित के लिए 'तेरा-तेरा' तोला। उनकी वाणी का मूल सिद्धांत यही है-

नाम जपो
किरत करो
वंड छको।

अर्थात् ईश्वर के नाम का स्मरण करो, जीवन में परिश्रम करो तथा जो कमाया है, धन अथवा वस्तु के रूप में, उसके भागीदार भी बनाओ। मिल बाँट कर खाने का गुण नानक देव जी ने सिखाया। सरबत का भला चाहने वाले गुरु नानक देव जी का जीवन उच्च जीवन था जिसमें सभी वर्गों के लोगों के लिए संदेश एवं उपदेश थे। मलिक भागो से लेकर भाई लालो तक, मौलवी से लेकर पंडित तक, सब कोटि के लोगों का उनके कर्मों के अनुसार मार्गदर्शन किया तथा सही जीवन जीने का इलाही संदेश दिया।

उनके व्यक्तित्व के विषय में रतन सिंह जग्गी एक स्थान पर लिखते हैं- "गुरु नानक मध्य युग के एक महान् लोकनायक थे। उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। उन्होंने अपने प्रत्येक उपदेश को पहले अपने आप पर लागू किया, उसके अनुसार जीवन को ढाला और जब उससे उद्दिष्ट फल की प्राप्ति होनी सिद्ध हो गई, तो उसको मनुष्यता के उपयोग के लिए प्रसारित किया। उनके उपदेशों का क्या प्रभाव था, परवर्ती इतिहास इसका साक्षी है। वर्तमान युग में भी उसकी एक विशिष्ट उपयोगिता है।"[1]

गुरु नानक की बानी का सार तत्व 'जपुजी साहिब' में मिलता है। इस रचना में उन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना से लेकर मोक्ष प्राप्ति के लिए सद्कार्यों की आवश्यकता पर बल दिया है। पूरी रचना पूरे जीवन की आध्यात्मिक यात्रा है जिसमें मानव को विविध अवस्थाएँ पार करते हुए अंततः मोक्ष प्राप्ति मार्ग बताया गया है। गुरु नानक की सभी रचनाओं में से 'जपुजी साहिब' अपेक्षाकृत अधिक प्रसिद्ध इसकी प्रसिद्धि का मूल कारण यह है कि सम्पूर्ण 'गुरु ग्रंथ' के प्रधान सिद्धांत अथवा सिक्ख दार्शनि सिद्धांत इस रचना के अंतर्गत समाविष्ट हैं। वस्तुतः 'आदि ग्रंथ' का इसमें सार तत्व है, अथवा 'आदि ग्र इसकी व्याख्या मात्र है। सम्पूर्ण सिक्ख धर्म का सैद्धांतिक आधार भी यही बानी है। इसी की व्याख्या सिक्खों का व्यावहारिक धर्म भी स्पष्ट होता है।

'जपुजी साहिब' की कुछ विशेषताएँ हैं जो इस कृति को गुरु नानक बानी के साथ-स 'आदि-ग्रंथ' का भी सारतत्व बनाती गयी हैं। इनमें से सर्वप्रथम है-

मूल मंत्र : मूल मंत्र की अभिव्यंजना, गुरु नानक देव जी ने ईश्वर के निराकार रूप को शाब्दि जामा पहनाने का प्रयास करते हुए की है। वेदों से लेकर अब तक ईश्वर के विषय में भिन्न-भिन्न विध एवं चिंतन पद्धतियाँ प्रचलित रही हैं। ईश्वर को व्यक्त करने के लिए भक्त सदैव लालायित और उत्साहि रहता है, इसी उद्देश्य से गुरु नानक देव जी भी जपुजी साहिब में ईश्वर के रूप को अपने शब्दों में बाँ का प्रयास करते हैं-

1 ओम् सतिनामु करता पुरुखु निरभाऊ निरवैर
अकाल मूरति अजूनी सैभं, गुरप्रसादि। (जपुजी)

परमात्मा एवं उसके गुणों के विषय में चिंतन एवं चर्चा सदियों से भक्तों एवं कवियों की जिज्ञा का अंग रहे हैं किन्तु गुरु नानक देव जी ने साथ में "गुरु प्रसादि" अर्थात् वह ईश्वर गुरु के प्रसाद अथ गुरु की कृपा से प्राप्त होता है, लिखकर इस अभिव्यंजना में वृद्धि के साथ भावों का मणिकांचन मिश्र किया है। "परमात्मा की यह गुण चर्चा औपनिषदिक दर्शन से काफी सामीप्य रखती है और अनेक प्रक की अन्य दार्शनिक पद्धतियों के सार तत्त्व भी इसमें मिल जाते हैं, किंतु गुरु नानक जी ने परमात्मा की प्रा गुरु के प्रसाद द्वारा बताकर दार्शनिक अभिरुचियों का भावात्मक अनुभूतियों से समन्वय स्थापित कर दि है।[3]"

हुकुम का माहात्म्य : गुरु नानक ने अपनी बानी में 'हुकुम' को सर्वोपरि माना है। गुरु नान कहते हैं ईश्वर के 'हुकुम' के बिना कुछ भी संभव नहीं- जपुजी में गुरु नानक शुरूआत में ही भक्त बन पूछते हैं-

किव सचिआरा होइए
किव कूड़े तुटै पालि (जपुजी)

स्वयं ही इस मूल प्रश्न का उत्तर देते हुए प्राणी मात्र के लिए संदेश एवं उपदेश भी समाहित क हैं-

हुकुम रजाई चलना नानक लिखिया नालि (जपुजी)

और साथ ही- "अंमृत वेला सच नाऊ वडिआई वीचार" कहकर सभी समस्याओं का हल

कर देते हैं। हुकुम का माहात्म्य गुरु नानक इस प्रकार बताते हैं-

हुकुमि होवन आकार हुकुमि न कहिआ जाई
हुकुमि होवन जीऊ हुकुमि मिलै वडिआई
हुकुमि उत्तम नीचु हुकुमि लिख दुख सुख पाईए। (जपुजी)

भक्ति की स्थापना : गुरु नानक देव जी ने इस कृति में भक्ति की स्थापना करते हुए साधक की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं की चर्चा की है। वह निराकार ईश्वर की उपासना को गाते हुए सम्राटों के सम्राट अनुपम ईश्वर को शब्दायित करते हैं-

"सो दर केहा सो घर केहा
जित बहि सरब समाले
बाजे नाद अनेक असंखा
केते वावनहारे
केते राग परी सियों कहीयन
केते गावनहारे
गावहि इन्द्र इन्द्रसणि बैठे देवतियां दरि नाले
गावहि सिद्ध समाधि अन्दरि
गावहि साध विचारे।" (जपुजी)

व्यापक ईश्वर : गुरु नानक ईश्वर को व्यापक से भी व्यापक मानते हैं। वह सर्वशक्तिमान है और लाखों-करोड़ों जिह्वाओं के साथ भी तुच्छ प्राणी उसका गायन नहीं कर सकता।

"इक दो जीभों लख होय
लख होय लखवीस
लख लख गेड़ा आखिए
एक नाम जगदीस" (जपुजी)

धार्मिक पाखंडों का विरोध : गुरु नानक देव जी ने जपुजी के माध्यम से धर्म को समस्त पाखंडों, मिथ्याचारों एवं ढोंगों से मुक्त कराकर, पुनीत पावन एवं अकलुष पथ पर लाकर खड़ा किया, प्राणी मात्र को पांच विकारों एवं नाना प्रपंचों से विलग रहने का अमर संदेश दिया तथा पूरा जीवन एवं भ्रमण इसी महती उद्देश्य में लगा दिया-

"असंख जप असंख भाउ
असंख पूजा असंख तप ताउ
असंख ग्रंथ मुख वेद पाठ
असंख जोग मनि रहहि उदास"

गुरु नानक का युग अनेक अतिमात्राओं, विरोधी विचारों और प्रवृत्तियों का युग था। देश के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में अनेक प्रकार की रूढ़ियाँ, गली सड़ी परम्पराएँ और अंधविश्वास व्याप्त थे। गुरु नानक का जन्म युग के इन विरोधों का सामंजस्य करने के लिए ही हुआ था। उन्होंने देख लिया था कि

संसार में मिथ्या का राज्य है.... नानक ने इन अतिवादों और मिथ्या के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। समन्वय का झंडा हाथ में लेकर उन्होंने आसाम से मक्का तक और कश्मीर से सिंहल तक अपनी दिग्विजय यात्रा की। गुरु नानक मध्यम मार्ग के हामी थे।[4] अपनी बानी में वह लिखते हैं-

"मने की गति कही न जाय
जो कोय कहै पिछे पछिताय" (जपुजी)

अर्थात् मन को साध लेने वाले साधक की गति शब्दों में कहीं नहीं जा सकती। गुरु नानक की समन्वय साधना मूलतः मन के सामंजस्य या संतुलन की साधना है। हर तरह के अतिरेक से मन को दूर रखकर, मन को संतुलित रखना नानक की अध्यात्म साधना का मूल आधार है।[5]

गुरु नानक मन के टिकाव की बात करते हैं। मन में दुविधा हो तो कुछ भी पाया नहीं जा सकता है। मन परेशानी में हो, द्वन्द्व में हो तो न माया मिलती है और न ही राम मिलते हैं।

पांच खंड : गुरु नानक देव जी ने 'जपुजी साहिब' में साधना की पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया है। यह पाँच अवस्थाएँ साधक को क्रमशः ईश्वर के समीप ले जाती हैं जहाँ पर साधक ईश्वर को आत्मसात् कर लेता है और वहाँ आध्यात्मिकता समाप्त हो जाती है। ये पाँच अवस्थाएँ जीव के जीवन मार्ग के पाँच रास्ते भी हैं-

1. धर्म खंड : धर्म खंड साधना की पहली अवस्था है जिसमें जीव को धर्म-अनुसार आचरण करते हुए अपने कर्मों को ईश्वरीय कृपा से मर्यादित करना है। इसी अवस्था में जीव के पुण्यात्मा तथा पापात्मा होने की परीक्षा होती है।

2. ज्ञान खंड : इस अवस्था में जीव ईश्वर के नाम के साथ जुड़ते हुए उसकी शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है। इस खंड में अनेक देवी देवता, अनेकों सृष्टियाँ अनेकों सिद्धनाथ, कानियाँ बाणियाँ हैं अनेकों राजे बादशाह हैं। इसमें सर्वत्र ज्ञान ही ज्ञान है।

3. सरम (श्रम) खंड : इस अवस्था में श्रम का महत्व है। श्रम अर्थात् उद्यम अर्थात् तपस्या एवं साधना से जीव में रूप निखार आता है। इसी अवस्था में 'सुरत मति मनि बुद्धि' की रचना होती है।[6]

4. कर्म खंड : कर्म से अभिप्राय प्रभु की कृपा है। इस खंड में सदा प्रभु के नाम पर विचरण रहता है। जीव इस अवस्था में पहुँचकर न तो मर सकते हैं और न ही उनको कोई ठग सकता है। इस खंड में भक्तों के अनेक लोक हैं और वे शाश्वत् सनातन आनंद में डूबे रहते हैं।

5. सच खंड : गुरु नानक लिखते हैं- "सच खंड वसै निरंकार।" इसी खंड में परमात्मा निराकार ईश्वर का वास है। इसी में अनंत खंड, मंडल, ब्रह्मांड हैं। यहीं पर साधक प्रभु को देखते-देखते प्रसन्न रहते हैं।

इस प्रकार गुरु नानक की यह रचना एक अलौकिक रचना है जिसमें साधना के प्रायः सभी बिंदु स्पर्श करते हुए भी भौतिक लोक के सभी मिथ्याचारों के बीच मध्यमार्ग बनाकर चलने की प्रेरणा दी गई है। जीव के अंदर ही सारे स्वर्ग, सारे नरक तथा साधना की अनंत भूमियाँ विद्यमान हैं। जब साधक सभी सांसारिक ऊहापोह से बाहर निकलता है तो सचखंड में बसे ईश्वर से उसका एकाकार हो जाता है। यही मोक्ष का द्वार है, यही साधना की चरम अवस्था है।

गुरु नानक देव जी की वाणी एक विशाल सागर के समान है जिसकी अनंत तरंगें आध्यात्मिक ज्योति में झिलमिलाती हैं और सहज ही मन एवं आत्मा को विस्मयावस्था में ले जाती हैं। परंतु यह महासागर उछलता हुआ नहीं है, अपितु शांत एवं स्थिर है। उसके गहर गंभीर और गहरे जल में अनेक हीरे, जवाहर, लाल माणिक्य और मोती बिखरे हुए हैं। गुरु वाणी के एक मात्र उपदेश को ग्रहण कर लेने से मन में अनेक माणिक्य और मोती, रत्न और जवाहर उत्पन्न हो जाते हैं[7]-

मति विच रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुनी (जपुजी)

निष्कर्ष : गुरु नानक जी की बानी अपने समय के समाज को आईना दिखाती हुई उन्हें कल्याण के मार्ग पर ले जाती है और सहज ही कर्म सिद्धांत को अपनाते हुए ईश्वर के निकट ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। उनकी रचना जपुजी सारी वाणी का सार है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गुरु नानक देव जी द्वारा रचित जपुजी संपूर्ण सार तत्त्व है, संपूर्ण मानवीय कल्याण की भावना का निकष है। गुरु नानक मनुष्य को सादा, सीधा, कर्ममय जीवन जीने की ऊर्जा देते हैं साथ ही मानव जीवन के उद्देश्य को न भूलने का उपदेश भी देते हैं। उन्होंने सृष्टि के क्षीरसागरों का मंथन करके अमूल्य रत्न मनुष्यता को अपनी वाणी के द्वारा सदा के लिए समर्पित कर दिए हैं। इनका मूल्य अनमोल है। और महिमा अनंत है साथ ही गुण एवं व्यापार भी अमूल्य है। गुरु नानक देव जी की वाणी मानव जीवन को श्रेष्ठ आध्यात्मिक अनुभूति वाले शांत रस से जोड़ती है जो परमपद की आनंदी अवस्था में ले जाता है, जहाँ दुःख सुख, हर्ष शोक, पुण्य पाप, कंचन माटी एक समान दिखाई पड़ते हैं।[8]

गुरु नानक देव जी धर्म सुधारक, इलाही वाणी के रचयिता एवं लोकनायक थे जो ईसामसीह, महावीर जैन, भगवान बुद्ध की श्रेणी में आ बैठते हैं। उनके शब्द सत्य थे, सार्थक थे और प्रासंगिक थे।

संदर्भ ग्रंथ-

1. जपुजी गुरु नानक देव
2. गुरु नानक रचनावली, भाषा विभाग, पंजाब
3. हिंदी साहित्य- प्रमुख कवि, कृष्ण देव झारी
4. संत कवि गुरु नानक, संपादक डॉ. महीप सिंह
5. गुरु नानक दी विचारधारा (पंजाबी), डॉ. रतनसिंह जग्गी

- अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दू कन्या कॉलेज, कपूरथला (पंजाब)
मो. : 8146616768

मीरा को समझने के लिए किसी यूनिवर्सिटी की डिग्री की जरूरत नहीं है, क्योंकि मीरा के पास कोई डिग्री नहीं थी। उसे समझने के लिए बस मीरा-भाव और मीरा जैसी भावदशा चाहिये।

- आचार्य रजनीश